डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 21.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 31)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा।...
..... मुदित राउ एहि भाँति।। "

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित रामचरितमानस के बालकाण्ड से उद्धृत है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्येतिहास में भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति-शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रस्तुत प्रसंग श्रीराम-विवाह की पृष्ठभूमि है। रामचरितमानस के बालकाण्ड में दोहा संख्या 211 तक में अहल्या के उद्धार की कथा वर्णित हुई है। उसके बाद श्रीराम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ जनकपुर की ओर यात्रा करते हैं, जिसका काव्यात्मक वर्णन दोहा संख्या 212 के अंतर्गत लिखित चौपाइयों से आरंभ होता है। प्रस्तुत चौपाइयाँ दोहा संख्या 214 के अंतर्गत हैं।

प्रस्तुत प्रसंग में विदेहराज जनक की नगरी के सौंदर्य-वर्णन के क्रम में कवि लिखते हैं कि राजमहल के सभी दरवाजे सुंदर हैं, जिनमें वज्र के समान मजबूत अथवा हीरों के समान चमकते हुए किवाड़ लगे हैं। वहाँ अन्य अधीनस्थ राजाओं, नटों, मागधों और भाटों की भीड़ लगी रहती है। घोड़ों और हाथियों के लिए बहुत बड़ी-बड़ी घुड़शालें और गजशालाएँ बनी हुई हैं, जो हर समय घोड़े, हाथी और रथों से भरी रहती हैं। बहुत से शूरवीर, मंत्री और सेनापति हैं। उन सबके घर भी राजमहल के समान ही हैं। नगर के बाहर तालाब और नदी के निकट जहाँ-तहाँ बहुत से राजा लोग उतरे हुए हैं अर्थात् डेरा डाले हुए हैं। इस प्रकार नगर वर्णन के क्रम में कवि विवरण को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि वहाँ आमों का एक

अनुपम बाग देखकर जहाँ सभी प्रकार की सुविधाएँ थीं और जो हर तरह से सुहावना बाग था, विश्वामित्र जी ने कहा-- हे सुजान रघुवीर ! मेरा मन कहता है कि यहीं रहा जाय। उनकी बात सुनकर कृपा के धाम श्रीरामचंद्र जी 'बहुत अच्छा स्वामी' कहकर वही मुनियों के समूह के साथ ठहर गये। मिथिलापति जनक जी ने जब यह समाचार पाया कि महामुनि विश्वामित्र जी का पदार्पण हुआ है तो उन्होंने पवित्र हृदय एवं चरित्र वाले मंत्री, अनेक योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण, गुरु शतानंद जी और अपनी जाति के श्रेष्ठ लोगों को साथ लेकर प्रसन्नता पूर्वक मुनियों के नायक विश्वामित्र जी से मिलने के लिए चले।

इस प्रकार इन चौपाइयों एवं दोहे में नगर के सौंदर्य-वर्णन के साथ कथा-क्रम को भी आगे बढ़ाया गया है।